

एक आवश्यक ही नहीं किन्तु परम पवित्र कर्तव्य है जो गर्भाधान संस्कार की शिक्षा द्वारा पूर्ण किया जा सकता है।

पुसवन संस्कार — दूसरा संस्कार

जब तक सन्तान माँ के गर्भ में रहती है तब तक उस के शरीर तथा मन को अपनी इच्छा अनुसार ढाला जा सकता है। यह समय ऐसा है मानो माँ के हाथ में दे दिया गया है कि अपनी सन्तान को जैसा चाहे बना डाले। जो माताएँ सन्तान के जन्म लेने के बाद उसके बिगड़ जाने को देखकर रोया करती हैं उन्हें समझ लेना चाहिए कि यह कष्ट उन्हें इसलिए झेलना पड़ता है क्यों कि जो समय बच्चे को ढालने का था उसे उन्होंने खो दिया। जब कोई वस्तु ढल रही हो तभी तो उसे पहले से बनी रूपरेखा के अनुसार ढाला जा सकता है। जब वह ढल गई तब उसे नई दिशा देना कठिन हो जाता है।

माँ के गर्भ में जो सन्तान है उसका दो दिशाओं में निर्माण होना है। एक दिशा है — उसका शारीरिक विकास तथा दूसरी दिशा है — उसका मानसिक विकास। शारीरिक विकास के लिए पुसवन संस्कार का विधान है।

पुसवन संस्कार का मुख्य उद्देश्य माता का ध्यान उसके गर्भ में पल रही सन्तान के विकास के शारीरिक विकास की ओर खींचना है। इसलिए यह संस्कार गर्भाधान के बाद यह निश्चय हो जाने पर कि गर्भ स्थिर हो गया है किया जाता है। यह निश्चय गर्भाधान क्रिया के दूसरे या तीसरे महीने में हो जाता है। गर्भ स्थिर हो जाने के बाद गर्भस्थ सन्तान को दो प्रकार के खतरे हो सकते हैं। एक खतरा तो यह कि माता की असावधानी से स्थित हुआ गर्भ ही गिर जाए। दूसरा खतरा यह है कि गर्भ तो बना रहे परन्तु स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करने से सन्तान का शरीर ठीक तरह से विकसित तथा पुष्ट न हो पाये। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए माता-पिता के लिए यह जानना आवश्यक है कि :-

(१) माता के लिए सावधानियाँ।

(२) पुष्टि के लिए क्या खाना चाहिए।

आगे इन विषयों पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला गया है।

(१) माता के लिए सावधानियाँ

अगर गर्भवती इधर-उधर फिरती रहे तो सन्तान पागल हो सकती है। गर्भवती बहुत लड़ने-भगड़ने वाली हो तो सन्तान को मृगी हो सकती है। अगर हमेशा शोक में मग्न रहेगी तो सन्तान डरपोक, कमजोर और कम आयु की होगी। अगर दूसरों के धन लेने की इच्छा करेगी तो ईर्ष्यालु, चोर, आलसी, कुकर्मि सन्तान को जन्म देगी। यदि वह क्रोध करेगी तो सन्तान क्रोधी, छली, चुगुलखोर होगी। यदि वह बहुत सोयेगी तो सन्तान आलसी और मूर्ख होगी। यदि शराब पीयेगी तो सन्तान कमजोर यादाश वाला होगा। अधिक चटपटे भोजन खायेगी तो सन्तान दुर्बल, बाझ या नपुसक होगी। बहुत कड़वा खायेगी तो सन्तान सूखे शरीर तथा कमजोर होगी।

ऊपर जो कुछ लिखा है उसका मतलब यही है कि जब सन्तान गर्भ में होती है तब माता की हर बात का उसके शरीर के निर्माण में भाग होता है। इसलिए माता का कर्तव्य है कि सन्तान की शारीरिक विकास को ध्यान में रखते हुए अपने खान-पान, रहन-सहन, व्यवहार को इस प्रकार सभाले रहे जिससे सन्तान पर किसी प्रकार का बुरा असर न पड़े।

(२) गर्भवती को पुष्टि (बल) के लिए क्या खाना चाहिए ?

प्रथम महिने में ठण्डा किया हुआ दूध पीये और सुबह-शाम उचित भोजन किया करे। दूसरे महिने गर्भवती स्त्री को खजूर तथा इलायची दूध में पका कर दे। तीसरे महिने

दूध में दो छोटे चम्मच शहद और एक चम्मच घी दूध में डालकर पीये। चौथे महिने में दूध में एक छोटा चम्मच ताजा मक्खन मिलाकर पीये। छठे तथा सातवें महिने मुनक्का, खजूर, इलायची दूध में मिलाकर थोड़ा घी डालकर पीये। आठवें महिने में दूध में पकाई हुई यवागू (पिसी हुई जौ या चावल के माँड) को घी के साथ समय-समय पर पीये। वह पानी जो भात पसाने पर निकलता है को माँड कहते हैं।

सीमन्तोन्नयन संस्कार

तीसरे संस्कार को सीमन्तोन्नयन संस्कार कहते हैं। जिसमें गर्भवती स्त्री का मन सन्तुष्ट, निरोग, गर्भ ठहरा हुआ, उत्तम और प्रतिदिन बढ़ता जावे, ऐसा संस्कार विधि में लिखा है। चौथे, छठे और आठवें महिने में सीमन्तोन्नयन संस्कार करना चाहिए।

यह संस्कार गर्भ में पल रहे सन्तान की मानसिक शक्तियों की वृद्धि के लिए किया जाता है। गर्भ में पल रहे सन्तान की मानसिक शक्ति तभी बढ़ सकती है जब गर्भवती का मन पूर्ण रूप से सन्तुष्ट और निरोग रहे।

यह तो सब जानते हैं कि भूमि में जब एक बीज बोया जाता है, उसके पश्चात् उचित समय पर उस को पानी तथा अमुक प्रकार का उचित मात्रा में खाद देने की आवश्यकता होती है। जब इसमें उचित समय पर खाद, पानी दिया जाएगा तभी पौधा अच्छी तरह से उन्नत होकर, उत्तम गुणों से युक्त होकर उत्तम फल देता है। इसी प्रकार चौथे मास से प्रारम्भ होकर आठवें मास के पूर्ण होने तक गर्भ में पल रहे सन्तान की मानसिक शक्तियाँ उन्नत होती हैं। इस अवस्था में यदि उसे संस्कार रूपी खाद और जल दिया जाये तो उस गर्भ में पल रहे सन्तान की मानसिक शक्तियाँ बढ़कर मजबूत, उच्च कोटी की और उन्नति को प्राप्त कर सकेगा।

बाकी अगले अंक में